भारतीय मूर्तिकला का बदलता स्वरूप – एक परिचय

मोहिन्द्र कुमार मस्ताना

असि0 प्रोफे0, मूर्तिकला विभाग, अपिजेय कालिज ऑफ फाइल आर्ट, जालन्धर

Reference to this paper should be made as follows:

मोहिन्द्र कुमार मस्ताना, भारतीय मूर्तिकला का बदलता स्वरूप – एक परिचय,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp 94- 99
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

भारतीय मूर्तिकला में बदलाव आत्मिक और सामाजिक संघर्ष के बदलाव का परिणाम है। जैसे–जैसे समाज में हर दिशा में तेजी से बदलाव आया उसी प्रकार भारतीय मूर्तिकला के क्षेत्र में भी बदलाव आते रहे।

जिस कला का आरम्भ एक धार्मिक कार्य के लिए हुआ धीरे–धीरे यही कला (मूर्तिकला) अब कलाकारों के लिए एवं समाज के लिए एक सृजनात्मकता, स्वतंत्र एवं स्वायत्त सत्ता को हमारे सामने नये चाक्षुकीय एवं दृश्य प्रभाव प्रस्तुत करती है। यही भारतीय मूर्तिकला के बदलते स्वरूप हैं।

कला और मानव का आदि काल से सम्बन्ध रहा है। कला मानव का सृजन है और यह सृजन मानव जीवन की अभिव्यक्ति है। कला अपने विभिन्न रूपों में मानव जीवन से ही अर्थ ग्रहण करती है। कला मानव मूल्यों, धर्म, नैतिकता आदि के प्रति उसकी आस्था, धारणा की आत्मिक अनुभूति है जो जीवन की वास्तविकता को उसके सृजन कार्य के रूप में परिणति प्रदान करती है कला मानव की उपासना है। कला एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के विचारों को किसी माध्यम के द्वारा प्रस्तुत करता है। वैसे तो ललित कलाओं के परस्पर तुलनात्मक रुचि दर्शक की मानसिकता पर निर्भर करती है। फिर भी चित्रकला, मूर्तिकला एवं अन्य दृश्य कलाओं की ओर दर्शक सहज ही आकर्षित हो जाते हैं। कला प्राचीन काल से अब तक विभिन्न आयामों व कला स्कूलों से होकर गुजरती है।

अगर ध्यान से देखा जाये तो प्राचीनकाल से अब तक कला में किसी न किसी रूप में आकृति मूर्तिशिल्पों का अंकन होता रहा। प्रागैतिहासिक काल से प्राप्त अवशेषों को देखकर पता चलता है कि जहाँ मानव ने अपने जीवन निर्वाह एवं डरावने जानवरों को मारकर अपनी रक्षा करने के लिए विभिन्न औजारों का निर्माण किया मूर्तिकला की शुरुआत को यहीं से माना जा सकता है। उसके बाद जैसे–जैसे समय बीतता गया मूर्तिकला का स्वरूप भी बदलता गया और इसमें सुदृढ़ता आती गई।

सिन्धु घाटी के प्रमुख नगर हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों मूर्तिकला के क्षेत्र में अपना एक अलग महत्व रखते हैं। इस समय के मूर्तिकारों की कल्पना भक्ति का परिचय तो उनके द्वारा बनाये गयी माँ देवी की मूर्तियाँ, मानव एवं पशु आकृतियों, मिट्टी के बर्तन एवं उनके ऊपर मानवाकृतियों का अंकन इसके अलावा कांसे में बनाई गयी नर्तकी का मूर्तिशिल्प उस समय के कलाकारों द्वारा विभिन्न माध्यमों में मूर्तिशिल्पों को बनाने की कुशलता के उदाहरण हैं। कांसे में बनाई गई मूर्तियों की संख्या बहुत कम है। फिर भी कला जगत में अपनी अलग पहचान रखती है। इसके बाद मौर्यकाल के सुप्रसिद्ध सम्राट अशोक ने मूर्तिकला का बुद्ध धर्म के प्रसार के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी इस समय में महात्मा बुद्ध की तो कोई भी प्रतिमा नहीं बनी लेकिन उनके जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का चिन्हों द्वारा ही शैल गृहों, स्तम्भों, स्तूप के तोरण एवं वेदिका के ऊपर तराशा गया। इस समय में हीनयान सम्प्रदाय होने की वजह से महात्मा बुद्ध की मूर्ति पूजा नहीं होती थी लेकिन उनके जीवन से सम्बन्धित घटित घटनाओं को प्रतीकों द्वारा ही पत्थरों में तराशा गया इसके बाद यह क्रम षुंग काल में भी चला। बुद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए कई स्तूप जिनमें सांची, भरहुत, अमरावती, बोध गया, नागरजूनीकोनिया प्रमुख हैं। इनमें विकसित मूर्तिकला के कई नमूने मिले। कुशान काल में महात्मा बुद्ध की पहली प्रतिमा बनाई गई इस समय में दो कला केन्द्र विकसित हुए जिसमें एक गंधार कला केन्द्र जिसमें महात्मा बुद्ध की प्रतिमा के ऊपर रोमन यूनानी कला का प्रभाव देखने को मिलता है वहीं दूसरा कला केन्द्र मथुरा जिसमें पूर्ण रूप से भारतीयता ही नजर आती है। मथुरा कला केन्द्र की मूर्तियों के ऊपर बाहरी कला का कोई प्रभाव नहीं है। कुषाणकाल के बाद गुप्त काल में भारतीय मूर्तिकला उच्च शिखर पर पहुँच गई इस समय में बुद्ध धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों के अलावा हिन्दू धर्म एवं जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों को पत्थरों में तराशा गया इस समय क कला को भारतीय कला का 'स्वर्ण युग' के नाम से भी जाना जाता है। इस समय में मूर्तिकला को मन्दिर निर्माण कला के साथ जोड़ दिया गया कहने का मतलब गुप्त काल में मन्दिर निर्माण शुरू हो गया और उनके ऊपर हिन्दू धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों को बनाया गया। इसके बाद मूर्तिकला का स्वरूप बदलता

गया पल्लव काल में चट्टानों को तराशकर मूर्तियाँ बनाई गईं। इस काल में अधिकतर हिन्दू धर्म से सम्बन्धित मूर्तिया बनीं। जो कि किसी न किसी पौराणिक कथा के आधार पर बनाई गई। मन्दिर निर्माण कला भी इस समय उच्च शिखर पर थी।

इसके बाद मूर्तियों को अधिकतर मन्दिरों की सजा सज्जा के लिए बनाया गया। इसके उदाहरण खजुराहों के विशालकाय मन्दिर, उड़ीसा का कोणार्क मन्दिर जिसमें भगवन् सूर्य की मूर्तियों के अलावा मानव एवं पशु मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रकूट काल में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफायें जिसमें ऐलोरा की गुफा नं० 16 जो कि कैलाशनाथ मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। उसके ऊपर तराशी गई मूर्तियाँ जिनमें रामायण से सम्बन्धित दृश्यों के अलावा शिव पार्वती के विभिन्न रूपों को मूर्तिकला के रूप में दर्शाया गया है। यह मूर्तियाँ देखने वाले को आश्चर्य चकित कर देती हैं। चोल काल में बनाई गईं कांसे की मूर्तियाँ विश्व प्रसिद्ध हो गईं। इस काल में बनाई गई शिव नटराज की मूर्तियों को भारतीय मूर्तिकला में विशेष स्थान मिला उसके बाद जब मुगल काल आया तो इस समय में मूर्तिकला को ज्यादा महतव नहींह दिया गया। इस काल में सिर्फ चित्रकला एवं भवन निर्माण कला को ही महत्ता मिली।

लेकिन बाद में 20 शताब्दी के आरम्भिक काल में भारतीय प्रसिद्ध मूर्तिकारों ने जिनमें जी० के मात्रे, बी०वी० तामिल एम०एस० नगप्पा, बी०पी० करमारकार, हिरनमॉय राय चौधरी, आर०पी० कामत, डॉ० पी०राय चौधरी मुख्य मूर्तिकार हुए जिनके मूर्तिशिल्पों में अकादमिक एवं यथार्थवादी प्रभाव देखने को मिलता है।

इसी समय में विश्व प्रसिद्ध मूर्तिकार रामकिन्कर बेज जिन्हें भारतीय आधुनिक मूर्तिकला का निर्माता माना जात है। इनकी मूर्तिकला से भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा मिली इसके बाद भारतीय मूर्तिकला में कई नये सितारे चमके जिनमें चिन्तामनी कार, प्रदोशदास गुप्ता, शंकु चौधरी, धनराज भगत, एम० धर्मनी, बलवीर सिंह कटट, पी०वी० जानकी राम, बिमानदास, नागजी भाई पटेल, केवल सोनी, ए०एस० पँवार, रमेश विष्ठ, राघव कनेरिया महेन्द्र पाण्डे आदि प्रमुख हैं। जिन्होंने भारतीय मूर्त, अमूर्त मूर्तिकला में चार–चांद लगाये।

20वीं शताब्दी में जैसे ही समाज में बदलाव आने शुरु हुए उसी प्रकार भारतीय मूर्तिकला के क्षेत्र में भी कई बदलाव आने शुरु हो गये। जिनमें मूर्तिकारों ने प्राचीन समयच से चल रहे ढाँचे से हटकर खुले मन से मूर्तिकला को सृजनात्मकता की ओर अग्रसर करना आरम्भ कर दिया। मूर्तिकला धीरे–धीरे मन्दिरों या उनकी दीवारों, चट्टानों आदि से हटकर संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए बननी आरम्भ हो गई।

धीरे–धीरे कलाकारों ने बंदिशों से हटकर काम करना शुरू कर दिया। जैसे–जैसे हमारी समाज एवं सोसायटी विकसित होने लगी उसी प्रकार मूर्तिकला का भी अपना रूप सोसायटी में विकसित होने लगा।

धीरे–धीरे कलाकारों ने माध्यमों की बंदिशों से बाहर निकल कर कार्य करना शुरू किया। जिसमें पहले मूर्तिकला के लिये कुछ चयनित माध्यम होते थे जैसे पत्थर, लकड़ी या धातु (कांसा) आदि कलाकरों ने इस माध्यमों के साथ दूसरी चीजों को मिलाकर मूर्तिकला का स्वरूप बदलना शुरू कर दिया। उदाहरण

के रूप में धनराज भगत पी०वी० जानकी राम, शंकु चौधरी आदि विख्यात नाम हैं जिनके प्रयासों से भारतीय मूर्तिकला को एक अलग पहचान मिली। 20वीं शताब्दी के अन्त तक मूर्तिकला में पूर्ण रूप से सृजनात्मकता देखने को मिलती है। इस समय तक मूर्त–अमूर्त मूर्तिशिल्पों को विभिन्न माध्यमों में बनाया गया।

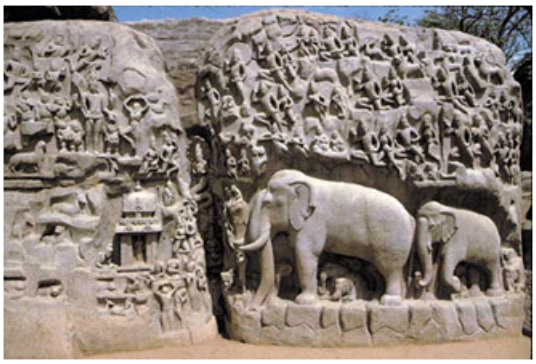

वर्तमान समय में कई मूर्तिकार जिनकी राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर में पहचान बन चुकी है। जिनमें बलवीर सिंह कट्ट, सतीष गुजराल, सुवोध गुप्ता, राजेन्दर सिंह टिकू के नाम प्रमुख हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1- भारतीय मूर्तिकला का परिचय–भीम सिंह डेरवाल।

2- A History of Fine Arts, in India and West By Edith Tomory published by Orient Longman Pvt. Ltd.

3- Gandhara Sculptures by D.C. Bhattacharya Govt. Museum and Art gallery Chandigarh.

4– प्राचीन भारती की कला–by Dr. Gyacharu Tripathi

5–A Survey of Indian Sculptures by S.K. Sarswati.

6–मूर्तिकला का इतिहास by S.M. Asgar Ali Kadvi